अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

सेमेस्टर- प्रथम(01) स्नातकोत्तर

प्रश्न पत्र- तृतीय(cc-03)

सूफीकाव्य की सामान्य विशेषताएँ

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा

12:02

Scanned with CamScanner

३आ. ३ सूफी काव्य की विशेषताएँ

भक्तिकालीन निर्गुण धारा की यह प्रेममार्गी शाखा कहलायी जाती है । इस काव्य धारा के प्रमुख कवि 'जायसी' है । प्रेममार्गी सूफी कवियों ने कल्पित कहानियों के माध्यम से प्रेममार्ग का महत्व प्रतिपादन किया है । इन कवियों ने लौकिक प्रेम के बहाने उस प्रेम तत्व का अभास दिया है । इन काव्य में रचित प्रेम कहानियों का विषय तो साधारण होता है । किसी राजकुमार का किसी राजकुमारी के प्रेम में पागल होना और घर बार छोडकर निकल पडना। अपनी प्रेमिका को पाने के लिए अनेक कष्ट और आपत्तियाँ झेलकर अंत में उस प्रेमिका राजकुमारी को प्राप्त करना । सूफी कवियों ने जो प्रेम कहानियाँ ली है वे सब हिन्दू परिवारस्थित कई दिनों से चलती आयी प्रेम कहानियाँ है । अतः कहानियों का आधार हिन्दू है । सूफी प्रेम काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ निम्न प्रकार है ।

काव्य प्रेरणा एवं प्रयोजन

प्रेममार्गी शाखा के सूफी काव्यधारा के कवियों ने सूफी मत का प्रचार प्रसार अपनी काव्य की रचना के माध्यम से करने का प्रयास किया है । इस परम्परामें हिन्दू कवि भी थे उन्होने काव्यारंभ में हिन्दू देवी-देवताओं की वंदना भी की है । किन्तु मुस्लिम कवियों ने सूफी मत का प्रचार करने का प्रयास किया था । साथ ही इनका काव्य-प्रयोजन यश प्राप्ति, काव्य कला का प्रदर्शन और युवाओं का मनोरंजन रहा है । इन कवियों ने भारतीय शास्त्रों का आधार लेकर रचनाओं का निर्माण किया है ।

Scanned with CamScanner

कथावस्तु

प्रेमाख्यानों में चार स्त्रोतोंसे प्राप्त सामग्री का कथावस्तु के रुप में उपयोग किया है। १) महाभारत, हरिवंशपुराण, विष्णुपुराण आदि। २) प्राकृत – संस्कृत के परम्परागत कथानक ३) उदयन, विक्रम, रत्नसेन आदि ऐतिहासिक पात्रों की गाथाएँ। ४) लोक प्रचलित प्रेमकथाएँ इन में कल्पना शक्ति का प्रयोग भी किया है। अतः इनका आधार भारतीय साहित्य को मानना चाहिए।

प्रबन्ध कल्पना

सूफी कवियों ने लौकिक प्रेम कहानियों के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की है। इन की यह प्रेम कहानियाँ प्रबन्ध काव्य की कोटि में आती है। इन कवियों का उद्देश कोरी प्रेम कहानी न होकर प्रेमतत्व का निरुपण करना तथा उसका महत्व निर्धारित करना है। सूफी कवियों ने अपने प्रेम पात्र के सौंदर्य को ज्योतिमय पुंज के रुप में चित्रित किया है, कि प्रत्येक जीव उसकी ओर आकर्षित होकर अपना सर्वस्व उस पर न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाता है। इस काव्य की प्रेमिकाएँ और प्रेमी पथ पर आनेवाली बाधाओंको पारकर सिध्दिपथ पर चढते जाते हैं। इन कथाओं में पक्षियों, देवों, और अप्सराओं का उल्लेख किया गया हैं।

प्रबन्ध काव्योचित वस्तु एवं घटना वर्णन में जो प्रवाह गति अपेक्षित है, प्रायः इन काव्यों में उसका अभाव है। कथावस्तु के वस्तु वर्णन में सब ने प्रबन्ध रुढियों की शरण ली है। प्रेमाख्यानों प्रायः सर्वत्र समुद्र, तूफान, फुलवारियाँ, वन और मकान जैसे है। इन काव्यों की क्रम योजना प्रायः एक जैसी है। सर्वप्रथम मंगलाचरण में ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का वर्णन, तत्पश्चात हजरत मुहम्मद और उनके सहयोगियों की प्रशंसा की जाती है। संप्रदाय के उल्लेख के बाद कथारंभ रागासक्ति और नायक–नायिका की प्राप्ति के लिए सर्वस्व त्यागकर आँधी तुफान का सामना करने निकलता है। प्रेमी प्रेमिका के मिलन के पश्चात अधिकतर प्रेमाख्यानों का अन्त दुखान्त होता हैं।

भाव पक्ष

प्रेम मार्गी सूफी कवियों का मुख्य विषय प्रेम है। प्रेम के वियोग पक्ष को अधिक महत्व इन कवियों ने दिया है। जितना ध्यान प्रेमी और प्रेमिकाओं के वियोग, उसकी अवधि में झेले जानेवाले कष्टों तथा उनका अन्त करने के लिए किए गये विविध प्रयत्नों को वर्णन करने में दिया है उतना उनके अन्तिम मिलन पर नहीं दिया गया। इन्होंने बारह–मास को महत्व दिया है और भारतीय पद्धति का व्यवहार किया है। कहीं–कहीं भारतीय प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। सूफियों ने वैष्णवों की अहिंसा को क्रियात्मक रुप से अपनाया है। उपनिषदों के प्रतिबिंब वाद के अनुसार नाना रुपात्मक जगत ब्रम्ह का प्रतिबिम्ब है। जायसी ने अनेक स्थलोंपर जैसे ''नयन जो देखा कमल भा ......'' में प्रति बिम्बवाद के साथ ही विचार साम्य दिखाया है। सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में पंचमहाभूतों में से आकाश छोडकर अन्य को स्वीकारा है। हठयोग का

Scanned with CamScanner

प्रभाव इन पर स्पष्ट ही है । इनके श्रृंगार का नख–शिख वर्णन कामशास्त्र से प्रभावित है । उनकी प्रणय भावना फारसी से नहीं कर भारतीय श्रृंगार रस की परम्परा से आती है ।

काव्य रुप

काव्य प्रकार की दृष्टी से सूफी काव्य भारतीय कथा काव्य परम्परा में आते है । इसकी पुष्टी अनेक लक्षणों से हो जाती है । अनेक कवियों ने अपनी रचनाओं को कथा की संज्ञा दी है । जैसे दामोदर रचित लखनसेन पद्मावती कथा, ईश्वरदास–सत्यवती कथा, जानकवि–कथा रत्नावती, कथा कामलता, कथाकनकावती, व्यास–नल दमयंती कथा आदि । कुछ कवियों ने कथा शब्द प्रयोग शिर्षक में नाकर काव्य के अन्तर्गत किया है – जायसी – प्रेम कथा एहीं भाँति बिचार हुँ, मंझन– कथा जगत जे ती कवि आई, उसमान – जाकी बुध्दि होई अधिकाई, आलम – कहौं बात सुनों सब लोग। कथा–कथा सिंगार वियोग । परशुराम चतुर्वेदी ने सूफियों के काव्य प्रकारों को अधिक स्पष्ट करते हुएँ लिखा है – ''सूफी प्रेमाख्यान तक ऐसी रचना है, जिसमें किसी प्रबन्ध काव्य के प्रायः सभी तत्व वर्तमान है, किन्तु जिसमें इसके साथ ही कथा आख्यायिका, जैन चरित काव्य, एवं मसनवी की भी विशेषताओं का भी समन्वय हो गया है, और यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।''

फारसी रुढ़ियों का प्रभाव मिलता है । कई प्रसंगो में रक्त की अतिरंजितता बिभत्स लगने लगती है । कई स्थलों पर संयोग अवस्था का वर्णन अश्लील लगने लगता है । इन कवियों ने संयोग अवस्थाओं को भोग विलास के लिए उपयुक्त वातावरण मान लिया तो कभी उसका रहस्यात्मक अर्थ भी कर डाला । प्रायः सूफी कवियों ने प्रेम तत्व की व्याख्या करते हुए सौंदर्य के स्वरुप एवं प्रभाव पर बहुत कुछ कह डाला है ।

चरित्र–चित्रण

सूफी काव्य के चरित्र–चित्रण में कोई वैविध्य नहीं है । इनके नायक प्रायः सामन्त या राजकुमार रहे है, और नायिकाएँ राजकुमारी के रुपमें दर्शायी गयी है जोकि संस्कृत साहित्य की नायिकाओं के समान एक ही ढाँचे में ढली हुई है । नायक का स्वरूप प्रायः पहले से ही निश्चित सा दृष्टी गोचर होता है। राजकुमारी अत्यन्त सुंदरी, रुपगर्विता दिखाई गई है । नायिकाएँ भारतीय परम्परा के अनुसार पतिव्रत धर्म का पालन करती हुई अन्त में सती हो जाती है। नायक का विरोध नायिका के पिता या संरक्षक द्वारा ही होता है। अन्य काल्पनिक पात्र है, उनका स्थान गौण है। कई स्थलों पर ऐतिहासिक चरित्रों का चित्रण प्रभावी हुआ है। इन सभी चरित्रों पर भारतीयता का गहरा प्रभाव है ।

लोक पक्ष एवं हिन्दू संस्कृति

प्रेममार्गी सूफी कवियों ने लोक जीवन का सहज चित्रण किया है । जैसे – अन्ध विश्वास, मनौतियाँ, यंत्र–तंत्र प्रयोग, जादू टोना, डायनों की करतूते, विभिन्न लोकोत्सव, लोक व्यवहार, तीर्थ, व्रत सांस्कृतिक वातावरण बडी सफलता से अंकित किया गया है ।

Scanned with CamScanner

प्रेम काव्यों के रचयिताओं नें हिन्दू घरानों की प्रेम कहानियाँ लेकर उनका तदनुरुप वर्णन किया है । सामान्यतः सभी सूफी कवियों को हिन्दू संस्कृति, परम्परा और धर्म का यथावत परिचय था । इस कारण हिन्दू धर्म के सिध्दांतों और आचार–विचार का सुंदर वर्णन किया है। हिन्दु चरित्रों में हिन्दु आदर्श की स्थापना की है । सूफी कवियों का नखशिख वर्णन भी संस्कृत के कामशास्त्रों के ग्रंथोपर आधारित है। प्रसंगानुरुप इन कवियों ने भारतीय ज्योतिष, रसायन शास्त्र, आयुर्वेद का भी वर्णन किया है। कवि जायसी का ज्ञान कहीं पर अधुरा था जैसे अलकापुरी को कुबेर नगरी कहा तथा नारद को शैतान के रुप में बताया है । उन्होंने स्वर्ग को आसमान कहा है और रत्नसेन की उपमा रावण से दी है । इस प्रकार की गलतियाँ सूफी काव्योंमें खोजी जा सकती है ।

शैतान

निर्गुण संत कवियों ने जिसे माया स्वरुप माना है, उसे ही सूफी कवियों ने शैतान कहा है। माया के समान शैतान को साधना मार्ग से भ्रष्ट करनेवाला मानते हैं । शैतान द्वारा निर्माण संकटों से मुक्ति – एक साधक को गुरु के आशीर्वाद से मिलती हैं । कवि की दृष्टी में शैतान का असाधारण महत्व हैं । पद्मावत काव्य में राघव चेतन शैतान के रुप में चित्रित हैं । सूफीयों नें शैतान को त्यागने योग्य नहीं माना हैं, क्यों कि शैतान के द्वारा उपस्थित व्यवधानों से साधक की अग्निपरीक्षा होती है और उसके प्रेम में दृढता और उज्ज्वलता आती हैं।

मण्डनात्मकता

संत कवियों नें हिन्दू–मुस्लिमों के बीच धार्मिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया था किन्तु उन्हें उतनी सफलता नहीं मिली जितनी सूफी काव्यों को मिली है । संत कवियों में खण्डनात्मकता थी जिससे हिन्दू और मुसलमान दोनों क्रोधित होते थे । सूफी कवियों ने मात्र कुशलता से काम लिया । उन्हों ने दोनों का विरोध तथा विशेष खण्डन नहीं किया । इन कवियों ने दोनों को ईश्वर का समान रुप में दर्शन करा कर दोनों सम्प्रदाय के भेदभाव मिटाने का प्रयास किया । दोनों को मनुष्य के सामान्य रुप में दिखाया । सूफीयों ने दूरदर्शिता से काम लिया है । जिससे उन्हें दोनो धर्मो की ओर से उचित प्रतिसाद मिला है । भारत में मुसलमान धर्म के प्रचार और प्रसार में इसी मण्डनात्मक शैली के कारण उन्हें अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है ।

नारी–चित्रण

सूफी काव्यों की यह बडी विशेषता हैं कि, उनमें प्रेम का प्रमुख स्थान नारी पात्र को ठहराया है । नारी को परमात्मा का प्रतीक माना हैं । वस्तुतः सूफी कवियों ने प्रेम साधना में नारी को सहायक रूप में स्वीकार किया हैं । फलस्वरुप यहाँ पर नारी साधकों की दृष्टी में स्वयं एक सिध्दी बनकर आती हैं । इसी कारण सूफी कवियों ने नारी साधकों को अनेक अलौकिक गुणों से युक्त बनाया है । सूफी कवियों ने नारी को कही स्वकिया तो कभी परकिया के रुप में चित्रित किया हैं । परंतु दोनों रुपों में वह पूज्य व [illegible]

Scanned with CamScanner

प्रतीक विधान

सूफी कवियों को लौकिक प्रेम कहानियों द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करते हुए अव्यक्त सत्ता का आभास देना यही उद्देश था । इस रसस्यात्मकता की अभिव्यक्ति के लिए सांकेतिक विधान या प्रतीकों का उपयोग करना अनिवार्य हो जाता हैं । यही कारण है कि, इन्होंने अपनी रचनाओं में प्रयुक्त कानिपत शब्दोंको सांकेतिक रुप दे दिया हैं । जहाँ ऐसा नहीं किया गया वहाँ उस रचना के अन्त में कथा के वास्तविक रहस्य को समझा दिया गया है । इसी उद्देश की पूर्ति करती हुई जायसी की पंक्ति ''तन चितउर मन राउन कीन्हा'' दिखाई देती है । कहीं–कहीं पर इन्होंने प्रकृति के माध्यम से भी अव्यक्त सत्ता की सर्व व्यापकता का संकेत किया है । जैसे पद्मावत में ''रवि ससि नखत्र दिपत ओहि जोती ।'' वस्तुतः सूफी कवियों में भावात्मक रहस्यवाद की मनोहारी सृष्टि हुई हैं ।

विविध प्रभाव

सूफी मत पर चार प्रभार विशिष्ट रुप से पडे हैं – आर्यों का अद्वैतवाद तथा विशिष्ठा द्वैतवाद, इस्लाम की गुह्य विद्या, नवअफलातूनी मत तथा विचार स्वातंत्र्य । इन पर

शैली

सूफी काव्य में कवियों में शैली की दृष्टि से अंतर है। जायसी की शैली में प्रौढ़ता एवं गंभीरता है किन्तु कुछ कवियों में अपरिपक्वता दृष्टिगोचर होती है। इनकी रचनाओं नें कथा तत्व की प्रधानता होने के कारण इन्हों ने इतिवृत्तात्मक शैली का प्रयोग किया है, कुछ कवियों ने अन्योक्ति, समासोक्ति, रुपक प्रतीक आदिके आयोजन द्वारा अपनी शैली में व्यंजना का वैभव संचारित कर दिया है। इन कवियों नें प्रबंध शैली के अतिरिक्त मुक्तक शैली का भी प्रयोग किया है।

भाषा

सूफी प्रेमाख्यानों की भाषा प्रायः सर्वत्र अवधी हैं । उसमान और नसीर पर भोजपुरी का प्रभाव है । नूर मुहम्मद ने कहीं–कहीं ब्रजभाषा का भी प्रयोग किया है । इन कवियों ने अवधि भाषा में तद्‌भव शब्दों का प्रयोग किया है, अवधि की लोकोक्तियाँ और मुहावरों का भी अच्छा प्रयोग किया है ।

रस

इन प्रेमाख्यानों में प्रधानतः श्रृंगाररस की व्यंजना हुई है । सर्वप्रथम नायक नायिका की ओर आकर्षित होता है और विरह वेदना और कई संकटों का सामना करना पडता है । उद्दीपन विभाव के अंतर्गत सूफीयों ने सखा–सखी, वन, उपवन, ऋतु परिवर्तन तथा भारतीय साहित्य में वर्णित अन्य उपकरणों का उल्लेख किया है । नायक के साहसिक कार्य के समय वीर

Scanned with CamScanner

रस का भी प्रयोग हुआ है । कहीं–कहीं करुण, शांत एवं बीभत्स रसों की भी अभिव्यक्ति हुई है ।

छंद

सूफीयों ने अपने प्रेमाख्यानों में अपभ्रंश के चरित काव्यों के समान दोहा–चौपाई शैली को अपनाया है । दोहा, चौपाईयाँ के अतिरिक्त सूफी कवियों ने सोरठे, सवैये, प्लवंगम,बरवै, कुण्डलियाँ और कविता आदि का भी प्रयोग किया हैं । कहीं–कहीं पर कुछेक कवि ने फारसी भाषा के बहर छंद की भी प्रयोग किया है ।

अलंकार

सूफी कवियों ने प्रचलित परम्परा के अनुसार अलंकारों का प्रयोग किया हैं। फारसी साहित्य से प्रभावित रहने पर भी भारतीय क्षेत्र से उपमानादि का ग्रहण किया है। इन्होंने समासोंक्ति का प्रयोग बहुत सुंदर तरीके से किया हैं। सूफी कवियों में समासोक्ति के सबसे अधिक सफल प्रयोक्ता जायसी हैं। उपमा, उत्प्रेक्षा, रुपक और अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग इन कवियों ने किया है।

सूफी प्रेम काव्य धारा मध्यकालीन हिन्दी साहित्य की व्यापक परम्परा मानी जा सकती हैं। मध्यकालीन संस्कृति एवं लोक जीवन के विविध पक्षों का सहज चित्रण इसमें हुआ है। उन्होंने प्रेम की पीडा के सुमधुर गीत गाएँ है। इन प्रेम कथाओं में विस्मय, दैवी एवं अलौकिक तत्व समान रुप से मिलते हैं। इनके काव्य में साहस और शौर्य का चित्रण हुआ है। इनमें भारतीय वातावरण का प्रभाव हैं। भारतीय श्रृंगार परम्पराओं का सभी ने पालन किया हैं। सबमें समान रुपसे कथानक रुढियों का प्रचलन रहा हैं। ऐतिहासिक और काल्पनिक प्रेम कथाओं की अपेक्षा लोकगाथाओं पर आधारित प्रेमकथाओं में लोक तत्व की मात्रा अधिक है।

Scanned with CamScanner